

सांध्यांच्या विकारांवर आयुर्वेदीय उपचार संधीवात, आमवात आदींचे शास्त्रीय विवेचन !

अनुक्रमणिका

१. आमवात (ह्युमॅटिझम)

| | |
|-------------------------|----|
| १. आम व आमनिर्मिति | १५ |
| २. आमाचे गुण | १६ |
| ३. आमाची लक्षणे | १६ |
| ४. आमाची कारणे | १८ |
| ५. आमवातातील लक्षणे | १८ |
| ६. आमाचे पचन | १९ |
| ७. आमाचे उत्सर्जन | २० |
| ८. उपद्रव | २१ |
| ९. उपचार | २२ |
| १०. आमवातात औषधी कल्प | २३ |
| ११. आहार (पथ्य-अपथ्य) | २८ |
| १२. साध्यासाध्यत्व | २८ |
| १३. कर्मविपाक | २९ |
| १४. संस्कृत संदर्भ | २९ |

२. वातरक्त

| | |
|---------------------|----|
| १. कारणे | ३४ |
| २. लक्षणे | ३४ |
| ३. साध्यासाध्यता | ३५ |
| ४. उपचाराची तत्त्वे | ३६ |
| ५. उपचार | ४० |
| ६. आहार | ४१ |

| | |
|--------------------------------------------------------------|----|
| ७. कर्मविपाक व दैवी चिकित्सा | ४२ |
| ८. संस्कृत संदर्भ | ४२ |
| | |
| ३. गाउट | |
| १. लक्षणे | ४८ |
| २. गाउटमध्ये आहारयोजना | ४९ |
| | |
| ४. अँक्यूट न्हुमेंटिक फीवर (आमवातज ज्वर) | |
| १. लक्षणे | ५० |
| २. विशेष तपासणी | ५१ |
| ३. उपद्रव | ५१ |
| ४. न्हुमेंटिक फीवर व न्हुमेंटॉइड आर्थ्रायटिस या रोगांतील फरक | ५२ |
| ५. उपचार | ५३ |
| ६. पथ्यापथ्य | ५३ |
| ७. उपद्रव | ५३ |
| ८. संस्कृत संदर्भ | ५४ |
| | |
| ५. न्हुमेंटॉइड आर्थ्रायटिस (जीर्ण संधिवात) | |
| १. प्रकार | ५६ |
| २. लक्षणे | ५७ |
| ३. उपचार | ५८ |
| ४. आयुर्वेदीय चिकित्सा | ५८ |
| ५. पथ्यापथ्य | ५९ |
| ६. लाक्षणिक चिकित्सा | ५९ |
| ७. इतर उपाय | ५९ |
| ८. दैवी चिकित्सा | ६० |
| | |
| ६. आँस्टिओआर्थ्रायटिस - वृद्धांचा संधिवात | |
| १. कारणे | ६१ |
| २. लक्षणे | ६१ |

| | |
|----------------------------------------------------------------------------|-----------|
| ३. रक्ततपासणी | ६२ |
| ४. क्ष-किरण परीक्षा | ६२ |
| ७. कनेक्टिव्ह टिश्यू डिसऑर्डर्स | ६४ |
| ८. धातुगत वात | |
| १. रसगत वात | ६५ |
| ३. मांसगत वात | ६५ |
| ४. मेदगत वात | ६६ |
| ५. अस्थिगत वात | ६६ |
| ६. मज्जागत वात | ६६ |
| ७. शुक्रगत वात | ६७ |
| ८. संस्कृत संदर्भ | ६७ |
| ९. तीन दोषांमुळे होणाऱ्या रोगांचे वर्गीकरण | |
| १. वात, पित्त, कफ या तीन दोषांच्या विकृतीमुळे होणाऱ्या रोगांचे वर्गीकरण | ६९ |
| २. वातदोषामुळे होणारे रोग | ६९ |
| ३. धातुगत वातरोग | ७० |
| १०. आवृत वातरोग | |
| १. दोषावृत वात | ७४ |
| अ. वातावृत वात | |
| आ. पित्तावृत वात | |
| इ. कफावृत वात | |
| ई. पित्तकफावृत वात | |
| २. अन्नावृत, पुरीषावृत व मूत्रावृत वात | ७४ |
| अ. अन्नावृत वात | |
| आ. पुरीषावृत वात | |

| | |
|--------------------------------------------------|----|
| इ. मूत्रावृत वात | |
| ३. धातुनी आवृत वात | ७४ |
| अ. रक्तावृत वात | |
| आ. मांसावृत वात | |
| इ. मेदावृत वात | |
| ई. अस्थि-आवृत वात | |
| उ. मज्जावृत वात | |
| ऊ. शुक्रावृत वात | |
| ४. पित्त व कफावृत्त पंचप्राण | ७५ |
| अ. पित्तावृत प्राण, व्यान, उदान, समान किंवा अपान | |
| आ. कफावृत प्राण, व्यान, उदान, समान किंवा अपान | |
| ५. पित्तावृत व कफावृत पंचप्राणांची लक्षणे | ७५ |
| ६. पित्तावृत व कफावृत वात यांची चिकित्सा | ८३ |
| ७. आवृत वाताचे उपद्रव | ८३ |
| ८. चिकित्सासूत्रे | ८३ |
| ११. सर्वांगगत वात | |
| १. लक्षणे | ८५ |
| २. अभ्यंग | ८५ |
| ३. मन्यास्तंभ (मान जखडणे) | ८६ |
| ४. स्नायुगत वात | ८६ |
| ५. गुडघे दुखणे व सुजणे | ८६ |
| ६. पाठीत वेदना होण्याची कारणे | ८७ |
| ७. कंबर दुखणे | ८७ |
| ८. बाळंतपणानंतर कंबर व पाठ दुखणे | ८८ |
| ९. पाठदुखी | ८८ |
| १०. कर्मविपाक | ८८ |
| ११. संस्कृत संदर्भ | ८८ |

मनोगत

दोन हाडांच्या जंकशनला (संधीला) सांधा असे म्हणतात. तसेच प्रत्येक दोन पेशींच्या किंवा दोन धातूंच्या जंकशनमध्येही सूक्ष्म सांधे असतात. हाडांमध्ये निसर्गतः वातदोष प्रामुख्याने असतो. शिवाय थोड्या प्रमाणात सतत होणाऱ्या हालचालींमुळे सांध्यांतील वातदोष सतत वाढत असतो. शांध्यांच्या रोगांत पित व कफ दोष थोड्या प्रमाणात वाढत असले किंवा दूषित होत असले, तरी वातदोष अधिक प्रमाणात वाढत किंवा दूषित होत असल्यामुळे सांध्यांच्या रोगांना संधिवात किंवा आमवात असे म्हणतात.

मार लागल्यामुळे क्षय, स्टॉफिलोकॉक्स, सिफिलिस व्हायरस इत्यादि जंतूंच्या संसर्गामुळे, स्कवर्ही ('सी' जीवनसत्त्वाची कमतरता), सिकल सेल डिसीज इत्यादि अनेक रोगांत सांधे सुजतात; परंतु लहान मुले व तरुण माणसांत च्युमॅटिक फीवर व च्युमॅटॉइड आर्थ्रायटिस ही मुख्य कारणे असतात. आयुर्वेदाने या दोन्हींचा आमवातात समावेश केला आहे. वृद्धांमध्ये ऑस्टिओआर्थ्रायटिस हे संधिवाताचे मुख्य कारण असते.

धातूंतील व पेशींतील सांध्यांत होणाऱ्या रोगांना आधुनिक वैद्यकात कनेक्टिव्ह टिश्यू डिसऑर्डर्स व आयुर्वेदात वातरक्त असे म्हणतात. सर्वच वातरोगांप्रमाणे आमवात व वातरक्तही ल वकर बरे होत नाहीत. या दोन्ही रोगांत सांधे व इतर लक्षणांत निसर्गतः चढउतार आढळतो; म्हणजे कधी कधी लक्षणे व सांध्यांची सूज संपूर्णपणे नाहीशी होते व नंतर काही आठवड्यांनी किंवा महिन्यांनी पुन्हा सांध्यांना सूज येते व काही आठवडे रहाते. हे चक्र बरेच महिने किंवा वर्षे चालू रहाते; म्हणून या रोगांत औषधी उपचारांबरोबर आहार-विहाराचे पथ्य-अपथ्य पाळणे महत्त्वाचे असते. त्याचबरोबर अग्रीची व सूर्यदेवतेची उपासना करावी.

या पुस्तकात आमवात, स्नायुगत वात, धातुगत वात व वातरक्त या रोगांचे विवेचन केले आहे. या पुस्तकाचा अभ्यास संधिवाताच्या रोगांना रोगमुक्त करण्यास उपयोगी पडेल. शेवटपर्यंत सर्व व्यक्तींचे सांधे निरोगी राहोत, हीच अग्निदेवतेजवळ प्रार्थना! - लेखक